स्वातन्त्र्योत्तर

भारत में संस्कृत की विकास यात्रा

सम्पादक

डॉ० चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
सन्त गणिनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुहम्मदाबाद-गोहना मऊ उ.प्र.

सारस्वतम् पब्लिकेशन

पटना (बिहार)

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ (भाषा-विभाग, उत्तर-प्रदेश शासनादीन) के आर्थिक सहयोग से 'संस्कृत-विभाग, सन्त गणिनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय', मुहम्मदाबाद-गोहना, मऊ के द्वारा त्रि-दिवसीय 'राष्ट्रीय शोध सङ्गोष्ठी' (३-५ अप्रैल२०२२) का आयोजन किया गया। सङ्गोष्ठी में प्राप्त समीक्षित शोधपत्रों का सञ्चयन आप सभी सुधी जिज्ञासुओं, शोधार्थियों, प्रचारकों एवं छात्रों के संमुख प्रस्तुत है।

प्रकाशक :
सारस्वतम् पब्लिकेशन
बाँकीपुर गोरख, पो०- फतुहा,
जिला - पटना, बिहार - 803201
Mob-7669695222, 7669697444
वेबसाइट - www.saraswatam.com
Email - info@saraswatam.com

वितरक : - **परिमल** पब्लिकेशन्स
27/28, शक्ति नगर, दिल्ली - 110007
दूरभाष - 011-23845456, 47015168
© सम्पादक

ISBN -978-81-953832-0-7

मूल्य: ₹ 1100

प्रथम संस्करण - 2022
मुद्रक:
S. P. Kaushik Enterprises

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटो कॉपी एवं रिकार्डिंग सहित, इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी अन्य रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में नारी और समकालीन सन्दर्भ

डॉ० अनीता कुमारी

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत साहित्य की अविरल धारा से प्रवहमान, जिसमें अनेक विद्वद्गण अपनी अभिनव रचनाओं के जल से सिंचित कर समाज को निरन्तर संवलित व सवंर्द्धित कर रहे हैं। शायद इसीलिए कहा जाता है- साहित्य समाज का दर्पण है। आधुनिक काल मे संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने अपनी रचनाधर्मिता से तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण ही नहीं प्रस्तुत किया, अपितु समाज की समस्याओं को रेखांकित कर उसका समाधान भी प्रस्तुत किया। अतः प्रस्तुत शोध पत्र साहित्य व समाज के लिए उपयोगी व प्रासंगिक है।

किसी भी देश के समाज के निर्माण में पुरुष की भाँति स्त्री की भी समान भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री विहीन घर को सही मायने में घर नहीं माना जाता है। ऋग्वेद में कहा गया है- जायेदस्तम्[1] अर्थात् 'बिनु गृहिणी भूतो का डेरा' इससे स्पष्ट है कि भारतीय समाज व संस्कृति में नारी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। नारी ब्रह्मविद्या है[2], श्रद्धा है, शक्ति है[3] लक्ष्मी है, सरस्वती है, अन्नपूर्णा है, ऋद्धि है, सिद्धि है और वह सब कुछ है, जो प्राणी-जगत के समस्त अभावों व संकटो को हर लेती है।[4] इसीलिए मनुस्मृति में कहा गया है- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

महाशक्ति स्वरूपा देवी पार्वती, देवी लक्ष्मी और ज्ञान की देवी सरस्वती के रूप में नारी आज भी जनमानस में पूजनीय है। भगवान् शंकर का अर्द्ध-नारीश्वर रूप की कल्पना नारी के गौरव व सम्मान का प्रतीक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार की सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं के कारण नारी अपने गौरवपूर्ण अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। वैश्विक युग में जिस प्रकार की सभ्यता व संस्कृति का उदय हुआ है, उसमें नारी का क्या अस्तित्व होगा, यही मनीषियों के चिन्तन का विषय बना। समाज में नारी को अबला मानकर पग-पग पर उसके शोषण के कितने नवीन साधन जैसे भ्रूण हत्या, कन्या हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, यौन शोषण, अशिक्षा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, बेमेल विवाह एसिड अटैक और उसके समूचे अस्तित्व और जीवन

को झिझोड़ने वाला बलात्कार आदि साधन अविष्कृत हो गये। परिणाम स्वरूप इस पुरुष प्रधान समाज में नारियों की संख्या में गिरावट आयी। और आज नारियों का अस्तित्व समाज में चिन्ता का विषय बन गया।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में हमें ऐसी अनेक रचनाएँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती हैं, जिसमें नारी सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं को उठाया गया तथा समाधान भी प्रस्तुत किया गया। वास्तव में संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने आधुनिक समाज के यथार्थ स्वरूप को काव्य, नाटक, कथा, उपन्यास आदि विविध विधाओं में वर्णन कर वर्तमान समाज में विद्यमान नारी के विविध स्वरूपों व समस्याओं का चित्रण किया, साथ ही यह सिद्ध कर दिया, कि संस्कृत जीवित भाषा है। संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने सामाजिक विषयों को ध्यान में रखते हुए महाकाव्य, नाटक, कथा, उपन्यास आदि विधाओं में रचना की। इस शोधपत्र मे संक्षेप में कुछ प्रमुख कृतियों का वर्णन इस प्रकार है-

आधुनिक काल में संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने पौराणिक विषय पर महाकाव्य विधा में लेखन कार्य किया और उसमें वर्तमान चेतना के पुट का समावेश किया। अभिराज राजेन्द्र मिश्र रचित "जानकी जीवनम्" इसका सशक्त उदाहरण है। इस महाकाव्य में देवी सीता का मार्मिक चित्रण किया गया है, परन्तु वह आदि काव्य रामायण की वैदेही से सर्वथा भिन्न है। लंका विजय के पश्चात् राम के निर्देश पर सीता को राम के समक्ष लाया जाता है। ऐसी स्थिति में राम कठोर स्वर में कहते हैं- सीते! तुम रावण के स्पर्श से मलिन हो चुकी हो, मैं तुम्हे स्वीकार नहीं कर सकता। वही सीता कहती हैं कि हे राम! मैंने भी आज यह बात जान ली कि न आप मेरे पति हैं और न मैं आपकी पत्नी। यह वर्णन संस्कृत आलोचकों को कुछ अस्वाभाविक सा लगता है, किन्तु उसमें उन्हें नारी वेदना को समझने और स्वयं निर्णय लेने में सक्षम साहसी नारी के वर्णन में पूर्ण सफलता मिली है। डॉ॰ रेवा प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित उत्तरसीताचरितम् में सीता परित्याग विषय को नवीन रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि ने अपनी नवीन परिकल्पनाओं से नायिका वैदेही को और दिव्यता से समन्वित किया है। कवि ने सीता निर्वासन प्रसंग को आज के नारीवादी युग के अनुरूप बुद्धिमती मैथिली के चरित्र को वर्णित किया है। गुप्तचर द्वारा लोकापवाद की घटना तथा महाराज राम को असमंजस की स्थिति में देखकर सीता स्वयं वनगमन

की अनुमति माँगती है। यहाँ
विवेक से निर्णय लेने में स

इस प्रकार के प्रसंग आ
पात्रों में भी देखे जा सकते हैं
वर्णन करने में कुछ आधुनिक
ने महाकाव्यों की भाँति चरित्र
कलेवर के साथ प्रस्तुत कर
उपाध्याय रचित 'कैकेयी वि
निराकरण कर देवी कैकेयी के
गया है। कवि का दूसरा नाटक
दूर कर वक्रोक्ति के माध्यम
किया गया है। विदुषी वेदकुम
के दिवंगत होने पर माँ की
कवयित्री की दूसरी रचना 'मे
स्त्री द्वारा अपनी सन्तान का प
कठिनाईयों का यथार्थ रूप
रचित 'मैत्रेयी' में नायिका वि
कठिन संघर्ष किया, वह आ
अथक संघर्ष को दिखाता है। ड
उपन्यास में नारी को अपनी
व्यक्त करता है। साथ ही उसक
कारण प्राध्यापक पद मिलता है।

वर्तमान समय में भी समा
बनी हुई है। प्रो॰ हरिदत्त शर्मा
अपितु पुलिस द्वारा रिश्वत लेक
कर वर्तमान समाज का यथार्थ
में प्रो॰ हरिदत्त शर्मा कहते हैं-

नवयुगे नवमानव रे
दहति दहने ज्वलति

की अनुमति माँगती है। यहाँ देवी मैथिली को आधुनिक नारी के अनुरूप स्व विवेक से निर्णय लेने में सक्षम दिखाया गया है।

इस प्रकार के प्रसंग आधुनिक संस्कृत साहित्य के नाटकों में वर्णित स्त्री पात्रों में भी देखे जा सकते हैं। स्वातन्त्र्योत्तर नाट्य साहित्य में पौराणिक पात्रों का वर्णन करने में कुछ आधुनिक तत्वों का भी आश्रय लिया है तथा कुछ नाटककारों ने महाकाव्यों की भाँति चरित्र तो पौराणिक लिया है, किन्तु उसे सर्वथा नवीन कलेवर के साथ प्रस्तुत कर उसे और प्रासंगिक बना दिया है।[5] कवि रामजी उपाध्याय रचित 'कैकेयी विजयम्' नाटक में कैकेयी सम्बन्धी लोकाववाद का निराकरण कर देवी कैकेयी के चरित्र को प्रमाण सहित निष्कलंक रूप में दर्शाया गया है। कवि का दूसरा नाटक, सीताभ्युदयम्' में सीता विषयक विसंगतियों को दूर कर वक्रोक्ति के माध्यम से मैथिली के चरित्र को पवित्रता के साथ चित्रित किया गया है। विदुषी वेदकुमारी घई विरचित 'अपूर्व प्रतिशोधम्' नाटक में पुत्र के दिवंगत होने पर माँ की वेदना का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है। कवयित्री की दूसरी रचना 'मेनका वात्सल्यम्' एकांकी में समाज में परित्यक्ता स्त्री द्वारा अपनी सन्तान का पालन-पोषण, शिक्षा, जीवन यापन, आदि विविध कठिनाईयों का यथार्थ रूप में वर्णन किया गया है। श्रीकृष्ण लाल जी द्वारा रचित 'मैत्रेयी' में नायिका विदुषी मैत्रेयी ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हेतु जितना कठिन संघर्ष किया, वह आधुनिक युग में बालिकाओं द्वारा शिक्षा प्राप्ति के अथक संघर्ष को दिखाता है। डॉ॰ कलानाथ शास्त्री विरचित 'जीवनस्य पाथेयम्' उपन्यास में नारी को अपनी योग्यतानुरूप स्थान न प्राप्त करने की वेदना को व्यक्त करता है। साथ ही उसकी योग्यता को दरकिनार कर पति के प्रभाव के कारण प्राध्यापक पद मिलता है। यह दंश स्त्री योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।

वर्तमान समय में भी समाज में दहेज प्रथा नारी जाति के लिए अभिशाप बनी हुई है। प्रो॰ हरिदत्त शर्मा रचित 'वधूदहनम्' रचना न केवल दहेज प्रथा अपितु पुलिस द्वारा रिश्वत लेकर वधू के पतिगृह पक्ष को दहेज हत्या से मुक्त कर वर्तमान समाज का यथार्थ चित्रण भी प्रस्तुत करती है। दहेज प्रथा के सन्दर्भ में प्रो॰ हरिदत्त शर्मा कहते हैं-

नवयुगे नवमानव रे ! का दशेयं सुविपरीता।
दहति दहने ज्वलति सीता ज्वलति दहने यद्यपि सीता।[6]

इस सन्दर्भ में कथा संग्रह 'जिजीविषा' के लेखक डॉ॰ वनमाली विस्वास का उल्लेख करना उचित होगा। जिजीविषा कथा संग्रह में अभिनव शिशुपालः नामक कथा में दहेज प्रथा और व्यापार बन चुके विवाह संस्कार से तप्त होते हुए प्रेम सम्बन्धों का वर्णन है। पतिगृह में नवविवाहिताओं को दहेज के कारण प्रताड़ित करना सम-सामयिक समस्याएँ हैं। इसका वर्णन करते हुए कवि हर्षदेव माधव कहते हैं-

यत्र नार्यः सहन्ते विपत्संहतिं निर्दयं दह्यमाना जनैर्ज्ञातिभिः।
भित्तयो नैव श्रृण्वन्ति तासां कथां शक्तिभक्तिच्युतं निर्दयं भारतम्।।[7]

डॉ॰ नन्दकिशोर गौतम रचित यौतुकवर्तनम् कथा संग्रह में उन्होंने दहेज प्रथा का अभिशाप के रूप में वर्णन किया है। डॉ॰ राधा बल्लभ त्रिपाठी रचित 'प्रेक्षण सप्तकम्' एकांकी संग्रह में संकलित सोम प्रथमम् एकांकी दहेज प्रथा पर आधारित है। इसमें दहेज के लिए सास-श्वसुर अपनी पुत्र-वधू को प्रताड़ित करते हैं और जान से मारने की योजना बनाते हैं। अपनी माँ पर अत्याचार होते देखकर उसकी पुत्री पुलिस को बुला लेती है वह अपनी माँ की रक्षा करती है तथा उसे साहस भी प्रदान करती है वह कहती है- अम्ब किं ते भूयः प्रियमुपहरामि।

इस कथा में सोमप्रभा आधुनिक नारी की भाँति दुश्चक्रां का भेदन करती है। साथ ही इसमें पुत्र की आकांक्षा, दहेज प्रथा, नारी उत्पीड़न आदि समस्याओं को चित्रित किया गया है। कन्या भ्रूण हत्या वर्तमान समय की एक ज्वलन्त समस्या है। आधुनिक समय में कन्या को माँ के गर्भ में ही हत्या कर मानव जघन्य पाप कर रहे हैं। परिणामस्वरूप देश में स्त्रियों की संख्या में गिरावट आ रही है। कवि हर्षदेव माधव ने कन्या भ्रूणहत्या के प्रति रोष व्यक्त करते हुए लिखा है- **भ्रूणहत्या स्त्रियो जायते लीलया।**[8]

श्री वनमाली विस्वास रचित वंशरक्षा कथा में पुत्रमोह से उत्पन्न विषम परिस्थितियों को चित्रित करती कथा है, जहाँ पुत्रमोह में दो कन्याओं की भ्रूणहत्या से व्यथित एवं विवश माँ की दुर्दशा को चित्रित कर लेखक ने समाज की कन्या भ्रूण हत्या की ओर इंगित करने का प्रयत्न किया है।[9] अभिराज राजेन्द्र मिश्र रचित 'शत परविका' में ऐसे ही कन्या बहुल परिवार का वर्णन है। कथाकार गोपबन्धु मिश्र रचित 'रेखाचित्रम्' कथा में स्त्री के

जीवन की विविध विडम्बनाओं
का सम्यक् चित्रण रेखांकित कि

आज समाज में व्यक्ति का
प्रतिदिन बलात्कार जैसी घटनाएँ
बलात्कार पीड़िता के जीवन को
'प्रणीत' 'बान्धवी रक्षिता' इसी स
छात्राएँ दुर्जनों के चंगुल में फँस
अपमान और बदनामी सहकर भी
करती है। साथ ही अन्य स्त्रियों क
देती है। डॉ॰ राधा बल्लभ त्रिपाठी
वातावरण और स्त्रियों की असुरक्षा
के अपहरण की घटनाओं से आश
लगता है। कन्या का पिता कहता है-

पुत्रि! अतिस्नेह पापशंकि
यदन्यथा चिन्तितम् तत्र प्र

वस्तुतः यह एकांकी वर्तमान परिवेश
हैं। नारी की वेबशी का वर्णन करते हुए

अद्यापि दण्डकवने हियते
क्रूरेण दस्युचरितेन दशानने
न याति किन्तु बत कश्चिदहो
विदेहतनयां करुणं लपन्ती।।[11]

अर्थात् समाज में नारी विषयक दृष्टि
हुआ है। आज भी नारी वैदेही की भाँति अ
परन्तु उसकी रक्षा के लिए पक्षीराज जटायु
सभी उदासीन बने रहते हैं।

विद्वान् पी॰ वरदराज शर्मा रचित कस्या
कुलवधू के स्थान अपशगुनी तथा उपेक्षित प्रा
के लिए विवश हो जाती है। उसकी उक्ति यथा

स्त्रीत्वमेव निन्दाभाजनम्। न विद्या, न स्वाध

जीवन की विविध विडम्बनाओं और आधुनिक समय में नारी की विवशताओं का सम्यक् चित्रण रेखांकित किया है।

आज समाज में व्यक्ति का नैतिक और चारित्रिक पतन हो रहा है, जिससे प्रतिदिन बलात्कार जैसी घटनाएँ प्रतिदिन घटित हो रही हैं। पुरूष का वहशीपन बलात्कार पीड़िता के जीवन को झकझोर कर रख देता है। आचार्य सीतानाथ 'प्रणीत' 'बान्धवी रक्षिता' इसी समस्या से प्रेरित एक कथा है, जिसमें अबोध छात्राएँ दुर्जनों के चंगुल में फँस जाती हैं। इसमें एक साहसी स्त्री समाज में अपमान और बदनामी सहकर भी वह भ्रूण हत्या न कर समाज का सामना करती है। साथ ही अन्य स्त्रियों को संयमित व अनुशासित रहने का सन्देश देती है। डॉ॰ राधा बल्लभ त्रिपाठी की रचना 'प्रतिक्षा' एकांकी में वर्तमान वातावरण और स्त्रियों की असुरक्षा का चित्रण किया गया है। समाज में नारियों के अपहरण की घटनाओं से आशंकित परिवार कन्या पर भी शंका करने लगता है। कन्या का पिता कहता है-

पुत्रि! अतिस्नेह पापशंकितो न्यायेन।
यदन्यथा चिन्तितम् तत्र प्रत्यविश्वास॥[10]

वस्तुत: यह एकांकी वर्तमान परिवेश में व्याप्त अपराधों पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। नारी की वेबशी का वर्णन करते हुए कवि राधाबल्लम त्रिपाठी कहते हैं-

अद्यापि दण्डकवने हियते च सीता,
क्रूरेण दस्युचरितेन दशाननेन।
न याति किन्तु बत कश्चिदहो जटायुस्त्रातुं
विदेहतनयां करुणं लपन्ती।।[11]

अर्थात् समाज में नारी विषयक दृष्टिकोण में कोई विशेष परिवर्तन नही हुआ है। आज भी नारी वैदेही की भाँति अपने सम्मान के लिए पुकार रही है, परन्तु उसकी रक्षा के लिए पक्षीराज जटायु जैसा साहस कोई नही दिखाता सभी उदासीन बने रहते हैं।

विद्वान् पी॰ वरदराज शर्मा रचित कस्यामपराध: रचना में विधवा नारी कुलवधू के स्थान अपशगुनी तथा उपेक्षित प्राणी बन अपने शरीर को बेचने के लिए विवश हो जाती है। उसकी उक्ति यथार्थ सत्य प्रकट करती है-

स्त्रीत्वमेव निन्दाभाजनम्। न विद्या, न स्वाधीनवृत्ति:, न वाऽर्जनशक्ति:।

स्त्रियो नाम पुरुषः परवत्यः। दिष्टदोषेण यदि या कोऽपि विधवात्वमापाद्यते, कथन्तराखिली क्रियते।

लेखक 'गर्ते पतेत क्रोधनः तथा कस्याहम्' में तीखे व्यंग्य के साथ सामाजिक स्थितियों पर प्रहार करता है।[12]

के॰आर॰ शंकरनारायण शास्त्री रचित भामिन्याः मदनतापः कथा में बेमेल विवाह का वर्णन किया गया है, जिसमें पैतालिस वर्षीय युवक का विवाह अष्टादश वर्षीय कन्या के साथ होता है। वैवाहिक जीवन से असन्तुष्ट स्त्री इक्कीस वर्षीय युवक से प्रणय निवेदन करती है, जिसकी सूचना पति को हो जाती है। पति उसे क्षमा कर अपनी पत्नी के प्रेम को जीत लेता है और सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करता है।[13] अभिराज राजेन्द्र मिश्र रचित 'एक हायनी' में बेमेल विवाह समस्या का समाधान परक शैली में कवि ने अपने विचार का प्रकट किया है।

डॉ॰ रेवा प्रसाद द्विवेदी रचित 'कस्य दोषः' कथा में नारीत्व के अभिशाप का मार्मिक वर्णन किया गया है। क्रूर पति के हाथो प्रताड़ित पत्नी को विवश होकर उसके साथ रहना पड़ता है और पति की मृत्यु के पश्चात् वैधव्य का दंश भी सहना पड़ता है।[14] श्रीधर भास्कर वर्णेकर रचित कथा वल्लरी कथा संग्रह में वर्तमान समय की सामाजिक विषमताओं और नैतिक मूल्यों के ह्रास का मार्मिक चित्रण मिलता है। शराबी पति द्वारा प्रताड़ित भारतीय नारी का जीवन अनेक संघर्षो से भरा है। कभी शोषण के विरूद्ध विद्रोह कर सन्यास या समाज सेवा का जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाती है। परन्तु उनका अतीत उनका पीछा नही छोड़ता है।[15]

प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र प्रणीत भग्नपंजरम् में बाल विधवा नायिका वन्दना अपने पिता डाँट फटकार और संयम के उपदेश को सुनती है, किन्तु पिता का माँ से प्रेमालाप देखकर वह सोचती है कि लोग सांसारिक सुखों की उपेक्षा वृद्धावस्था में भी नहीं कर पाते हैं तो मैं अपना सम्पूर्ण जीवन रूढ़िग्रस्त होकर क्यों व्यतीत करूँ यह सोचकर वह अपने प्रेमी जयदेव से विवाह कर लेती है।[16] पं॰ राम जी उपाध्याय प्रणीत 'द्वा सुपर्णा' उपन्यास में कृष्ण सुदामा की लोक प्रिय कथा को वर्तमान सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है। वेद दर्शन में निष्णात विद्वान् सुदामा विदुषी पत्नी कौमुदी से परामर्श कर ग्राम वासियों के सुख एवं

ामना के उद्देश्य से गाँव में स्त्रियों के लिए संस्था, ग्राम वधुओं तथा ों की शिक्षा के लिए एक पाठशाला की स्थापना करते हैं।

ौमुद्या: कल्पनया सुदाम्नो ग्रामे स्त्रीणां संस्था सवंर्धिता:। अचिरमेव तत्र परिवर्तनं समजनि। तथाहि कन्यकानां कृते एका पाठशाला प्रवर्तिता। ूनां कृते प्रौढ़ा शालोद्घाटिता।[17]

ायिका कौमुदी के माध्यम से लेखक ने समाज एवं राष्ट्र के निर्माण यों के योगदान को प्रकाशित किया है। यहाँ नायिका कौमुदी वर्तमान की चिन्तनशील नारी का प्रतीक है।

केशव चन्द्र दास की अर्द्धशतक लघु कथाओं का संग्रह दिशा विदिशा के नाम पर कथा संग्रह का नाम पड़ा) की नायिका विदिशा को अपने र के दस सदस्यों का भरण पोषण करने के लिए अपने आपको प्रत्येक वंचना (वेश्यावृत्ति) पड़ता है।

उपर्युक्त सभी कथाओं में समाज की सेवारत स्त्री, प्राचीन और नवीन पीढ़ी चारों का अन्तर, पति-पत्नी, सास-बहू के संघर्षो की मार्मिक कथा है।[18]

निष्कर्षत: उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य के विद्वानों समकालीन समाज में नारियों की विविध समस्याओं को अपने काव्य में कर समस्या का समाधान कर समाज को जागरूक करने का प्रयास है। समकालीन समस्याओं को उन्हांने जिस सहज और सरल शैली अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया जिससे सामान्य जनमानस सहज रूप से ात हो सके। इस दिशा में प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र, प्रभुनाथ द्विवेदी, डॉ॰ रेवा द द्विवेदी, डॉ॰ नलिनी शुक्ला, डॉ॰ केशव चन्द्र दास, डॉ॰ बैकुण्ठ नाथ ी, डॉ॰ राधा वल्लभ त्रिपाठी, पण्डिता क्षमाराव, हर्षदेव माधव आदि कृत विद्वानों के साहित्य सृजन के माध्यम से जो प्रयास किया गया है, सराहनीय है। वास्तव में स्त्री शक्ति ही भारतीय संस्कृति की संपोषिका प्रकृति का आधार है। भविष्य में संस्कृत साहित्य की रचनाओं में नारी यक नवीन आयाम और जुड़ेंगे संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि होगी, यह ा भी उत्पन्न होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.ऋग्वेद 3/53/4

2.स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ। ऋग्वेद

3.या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥ दुर्गा सप्तशती गीताप्रेस गोरखपुर

4.सर्वमंगलमांग्लये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥ दुर्गा स० पृ.-8 गीताप्रेस गोरखपुर

5.द्रक अंक 18-दृग भारती- इलाहाबाद

6.प्रो॰ हरिदत्त शर्मा-उत्कलिका गीतिकाव्यम्

7.कवि हर्षमाधव- भाति ते भारतम् श्लोक सं0 20

8.कवि हर्षमाधव- भाति ते भारतम् श्लोक सं0 92

9.डॉ॰ वनमाली विस्वास- वंशरक्षा कथा

10.संस्कृत साहित्य पर प्रभाव- डॉ॰ मधु सत्यदेव पृ॰ 78 शोध संचयन भाग 6 अंक 1 जनवरी 2015 में प्रकाशित

11.आचार्य राधाबल्लभ त्रिपाठी- लहरीदशकम् (अद्यापि लहरी) श्लोक सं0 20

12.आचार्य बलदेव उपाध्याय: संस्कृत वाड्.मय का बृहत् इतिहास सप्तम् खण्ड पृ॰ सं॰ 485 प्रकाशक उ॰प्र॰ संस्कृत संस्थान लखनऊ

13.आचार्य बलदेव उपाध्याय: संस्कृत वाड्.मय का बृहत् इतिहास सप्तम् खण्ड पृ॰सं॰ 485

14.आचार्य बलदेव उपाध्याय: संस्कृत वाड्.मय का बृहत् इतिहास सप्तम् खण्ड पृ॰सं॰ 498

15.आचार्य बलदेव उपाध्याय- संस्कृत वाड्.मय का वृहत इतिहास सप्तम् खण्ड पृ॰सं॰ 496

16.आचार्य बलदेव उपाध्याय: संस्कृत वाड्.मय का बृहत् इतिहास सप्तम् खण्ड पृ॰सं॰ 493

17.डॉ॰ शशि कुमार सिंह- समकालीन सन्दर्भ और संस्कृत रचना का आधुनिक काल पृ॰ सं॰ 163 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाड्.मय की प्रासंगिकता ग्रन्थ में प्रकाशित 2019

18.युगीन समस्याएँ तथा संस्कृत वाड्.मय सम्पादक डॉ॰ राम परसन तिवारी पृ॰सं॰ 63 अमरग्रन्थ पब्लिकेशन दिल्ली

डॉ॰ अनीता कुमारी
एसो॰प्रो॰ संस्कृत विभाग
राजकीय महिला पी॰जी॰ कालेज, गाजीपुर
email - kumaridranita@gmail.com